आचार्य परमेष्ठी (छत्तीसी) विधान एवं दीपार्चना

मण्डल

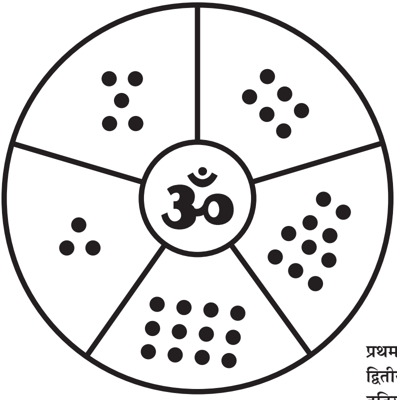

प्रथम कोष्ठ - 3 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 5 अर्घ्य
तृतिय कोष्ठ - 6 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठ - 10 अर्घ्य
पंचम कोष्ठ - 12 अर्घ्य
कुल 36 अर्घ्य

मंगल आशीष :- गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज

कृतिकार :- आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान ।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान ।॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार ।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार ॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र ।
चरण कमल में आपके, झुकते विनतं शतेन्द्र ।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार ।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार ॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश ।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश ॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग ।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विरांग ।।॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार ।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत ।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत ॥1॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार ॥10॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं ॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु ।
णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये ।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए ।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए ।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।। ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान ।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान ।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन ।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिक्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश ।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय ।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान ।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण ।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज ।।3।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सारी जिन्दगी रिश्ता निभाया हमने ।
यूँ ही समय बीत गया कुछ न पाया हमने ॥
लोग कहते हैं आप सबका भला करते हो ।
औरों का भला करने में धोखा खाया हमने ॥

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ॥
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार ।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री..... सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा ।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं अहँ मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार ।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार ॥

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल ।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल ।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल ।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन ॥1॥
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष ॥2॥
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान ।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार ।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक कुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण ।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान ।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व ॥

ॐ ह्रीं अर्ह मूलनायक 1008 श्री......सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान ।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिंक्षिपेत्)

"गुरु भक्ति - स्तवन"

तर्ज - चांदी जैसा रूप ......

महावीर जैसा रूप है जिनका, ध्याते आतम राम ।
मोक्ष मार्ग के राही के पद, बारम्बार प्रणाम ॥टेक॥
जिनको यह दुनियाँ ना भाई, भाई मुक्ती नार ।
रचने चले स्वयंवर उससे, मोक्ष महल के द्वार ॥
दूल्हा बने दिगम्बर होके, सम्यक्त्वी अनगार ।
हम भी राही बनें मोक्ष के, पाएँ हम शिवधाम ॥
महावीर जैसा रूप ...॥1॥

पाए जो आशीष आप से, चले मोक्ष की ओर ।
हृदय हमारे वास करो गुरु, पावन चंद चकोर ॥
तारण तरण जहाज गुरुजी, थामो मेरा हाथ ।
चरण शरण दो गुरुवर हमको, पाएँ आपका साथ ॥
महावीर जैसा रूप ...॥2॥

चरण शरण में खड़े हैं गुरुवर, ठुकराना न नाथा ।
हम हैं भूले भटके राही, रखना अपने साथ ॥
मरण समाधी हो गुरु चरणों, झुका रहे पद माथ ।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, हे गुरु! दीनानाथ ॥
महावीर जैसा रूप ...॥3॥

तीर्थंकर के राजदुलारे, जिनवाणी के लाल ।
यह संसार असार जानकर, तजा जगत जंजाल ॥
जग को जग की निधियाँ दे दी, पाने को शिवधाम ।
"विशद" भाव से गुरु चरणों में, बारम्बार प्रणाम ॥
महावीर जैसा रूप ...॥4॥

आचार्य छत्तीसी विधान

"स्थापना"

पंचाचार के धारी पावन, दश धर्मों के धारी संत ।
द्वादश तप को तपने वाले, त्रय गुप्ती धारी गुणवन्त ।।
षड् आवश्यक पालन करने, वाले परमेष्ठी आचार्य ।
विशद हृदय के सिंहासन पर, आहवानन् करते सब आर्य।।

दोहा

आओ पधारो मम हृदय, हे आचार्य! ऋशीष।
दर्शाओ शिव पद हमें, झुका रहे पद शीश ।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108................ मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(ज्ञानोदय छन्द)

जन्म जीव का होता है तब, जीव रोय सब हँसते हैं।
मोह से मोहित होने वाले, जग जंजाल में फँसते हैं।।
जन्म जरादिक रोग नशाने, प्रासुक नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ताप सूर्य का शीत ऋतू में, कभी कदाचित् रुच जाए ।
पर मन का संताप जीव को, नित्य निरन्तर झुलझाए ॥
भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन विविध चढ़ाते हैं ।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ॥2॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलता है सम्मान कहीं पर, कहीं कहीं अपमान खिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, संयम से शिवधाम मिले॥
स्वपद पाने को हे गुरुवर!, अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ॥3॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों जैसी दिखे नाशिका, सौरभ पाने ललचाए ।
मोह से मोहित होके आतम, काम व्यथा में तड़फाए ॥
काम रोग का मूल नशाने, पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं ।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ॥4॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा से प्राणी कम मरते पर, खाके मरते हैं भारी ।
फिर भी खाने में रुचि रहती, प्राणी की हो सविकारी ।।
क्षुधा रोग हरने को स्वामी, शुभ नैवेद्य चढ़ाते हैं ।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य प्रकाशित करता जग को, किन्तु मोह तम नहीं हरे ।
दीप ज्ञान का पूर्ण प्रकाशित, जीव गुणों को शोध करे ।।
मोह महातम हरने को यह, घृत का दीप जलाते हैं ।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतन का संयोग प्राप्त कर, मूल्यवान तन होता है ।
चेतन तन से रागी होके , बीज कर्म का बोता है ।।
कर्म कालिमा हरने को यह, सुरभित धूप जलाते हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः अष्ट कर्म दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

वृक्षों में फल लगते हैं तो, नीचे को झुक जाते हैं।
भक्त चरण में झुक-झुक करके, भक्ती का फल पाते हैं ।।
परम मोक्ष पद की प्राप्ती को, फल ये सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः
महामोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सरस चरु, दीप धूप फल विविध प्रकार ।
अर्घ्य बनाया अष्ट द्रव्य का, चढ़ा रहे पद बारम्बार ।।
पद अनर्घ्य पाने को हम यह, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
परम पूज्य आचार्य श्री के, पद में शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 .... मुनीन्द्राय नमः
अनर्घ्य पद प्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

राही मुक्ती मार्ग के, होते हैं जिनसंत ।
शांती धारा दे रहे, पाने भव का अंत।।

।। शान्तये शांति धारा ।।

संयम के धारी कहे, परम पूज्य ऋषिराज ।
पुष्पाजलि कर पूजते, विशद भाव से आज ।।

।। पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घावली एवं दीपार्चना

दोहा

परमेष्ठी आचार्य शुभ, पालें पंचाचार ।

पुष्पांजलि कर पूजते, जिनपद बारम्बार ।।

(पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

नोट – खाली स्थान में जिन आचार्य श्री की अर्चना करनी है उनका नाम बोले। यदि दीपार्चना करनी है तो 36 दीपक जलाकर ''अर्घ्य'' के स्थान पर दीप का मंत्र बोलें।

(त्रय गुप्ति युत् आचार्य परमेष्ठी)

मन का गोपन करने वाले, होते हैं मन गुप्तीवान ।
अशुभ ध्यान के परिहारी हो, निज आतम का करते ध्यान ।।
मोक्ष मार्ग के राही पावन, परमेष्ठी आचार्य महान ।
शिव पद के राही बनने को, करते हैं हम भी गुणगान ।।1।।

ॐ हूँ मनो गुप्ति सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वचन गुप्ति के धारी पावन, वचनों का करते हैं रोध ।
चेतन के चिंतन में रत हो, स्वयं जगाएँ आतम बोध ।।
मोक्ष मार्ग के राही पावन, परमेष्ठी आचार्य महान ।
शिव पद के राही बनने को, करते हैं हम भी गुणगान ।।2।।

ॐ हूँ वचन गुप्ति सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

काय गुप्ति के धारी ऋषिवर, होते स्थिर आसन वान ।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, करने निज आतम कल्याण ।।
मोक्ष मार्ग के राही पावन, परमेष्ठी आचार्य महान ।
शिव पद के राही बनने को, करते हैं हम भी गुणगान ।।3।।

ॐ हूँ काय गुप्ति सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पंचाचार गुण युक्त आचार्य

(ज्ञानोदय छन्द)

जीवादि तत्त्वों पर करते, दोष रहित जो सद्श्रद्धान ।
प्रथम कषाय अनन्तानुबन्धी, करते मिथ्यातम की हान ।।
दर्शनाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य।
दीप जलाकर अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।4।।

ॐ हूँ दर्शनाचार सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

संशय और विमोह त्याग कर, करते हैं विभ्रम का नाश ।
मिथ्या ज्ञान रहित होकर जो, करते सम्यक् ज्ञान प्रकाश ।।
ज्ञानाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
दीप जलाकर अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।5।।

ॐ हूँ ज्ञानाचार सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पंच महाव्रत समिति पाँच तिय, गुप्ती का पालन करते ।
तेरह विध चारित्र पालते, अतीचार को भी हरते ।।
चारित्राचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
दीप जलाकर अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।6।।

ॐ ह्रूँ चारित्राचार सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अनशन आदिक बाह्य सुतप छह, अंतरंग तप पाल रहे।
द्वादश विध तप धारण करके, संयम रतन सम्हाल रहे ।।
तपाचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
दीप जलाकर अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।7।।

ॐ ह्रूँ तपाचार सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कर्म नाश करने की शक्ती, में वृद्धी नित करते हैं।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित तप, के भावों से भरते हैं ।।
वीर्याचार का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
दीप जलाकर अर्घ्य चढ़ाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।8।।

ॐ ह्रूँ वीर्याचार सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

(षट् आवश्यक गुण धारक आचार्य परमेष्ठी)

(ज्ञानोदय छन्द)

दुर्ध्यानों का त्याग करें जो, जीवों में समता पावें।
तीन काल करते सामायिक, आवश्यक करते जावें ॥
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ॥9॥

ॐ ह्रूँ समता आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री........ मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चौबिस तीर्थंकर की भक्ती, परमेष्ठी को नित ध्यावें ।
सरल सौम्य भावों के द्वारा, स्तुति कर जिन गुण गावें ॥
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ॥10॥

ॐ ह्रूँ स्तुति आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री.........मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देव वन्दना करें भाव से, दोष रहित जिन गुण गावें।
उनके गुण को पाने हेतू ,सतत् भावना जो भावें ॥
परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।
आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ॥11॥

ॐ ह्रूँ वंदना आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री.........मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अहो रात्रि में मन वच तन से, दोष कोई भी लग जाए ।

आलोचन कर प्रायश्चित्त लें, प्रतिक्रमण वह कहलाए ।।

परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।

आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ।।12।।

ॐ हूँ प्रतिक्रमण आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मन वच तन से त्याग करें जो, नहीं रोष मन में लावें ।

प्रत्याख्यान कहा आगम में, साधू नित्य इसे पावें ।।

परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।

आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ।।13।।

ॐ हूँ प्रत्याख्यान आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तन से ममता भाव त्याग कर, निज आतम को जो ध्यावे।

पावन ध्यान लगावे मन से, कायोत्सर्ग कहा जावे ।।

परम पूज्य आचार्य श्री के, भाव सहित गुण गाते हैं।

आशिष पाने तव चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं ।।14।।

ॐ हूँ कायोत्सर्ग आवश्यक गुण सहित आचार्य श्री......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

(दश धर्म धारक आचार्य परमेष्ठी)

(चाल छन्द)

जो क्रोध कषाय नशाते, वे क्षमा धर्म प्रगटाते ।
हे क्षमा धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥
गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।
हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥15॥

ॐ ह्रूँ उत्तम क्षमा धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो मद को पूर्ण विनाशें, वे मार्दव धर्म प्रकाशें ।
हे मार्दव धर्म के धारी !, तव चरणों ढोक हमारी ॥
गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।
हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥16॥

ॐ ह्रूँ उत्तम मार्दव धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो हैं माया के त्यागी, वे आर्जव धर्मानुरागी।
हे आर्जव धर्म के धारी !, तव चरणों ढोक हमारी ॥
गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।
हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥17॥

ॐ ह्रूँ उत्तम आर्जव धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो मन से लोभ भगावें, वे शौच धर्म प्रगटावें ।

हे शौच धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥18॥

ॐ ह्रूँ उत्तम शौच धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

हैं उत्तम सत्य के धारी, ज्ञानी मुनिवर अनगारी ।

हे सत्य धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥19॥

ॐ ह्रूँ उत्तम सत्य धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो नहीं असंयम करते, वे संयम में आचरते ।

हे संयम धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥20॥

ॐ ह्रूँ उत्तम संयम धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

इच्छा निरोध के धारी, तप धारी हों अनगारी ।

हे उत्तम तप के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥21॥

ॐ ह्रूँ उत्तम तप धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो सर्व परिग्रह त्यागें, वे त्याग धर्म में लागें ।

हे त्याग धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥22॥

ॐ ह्रूँ उत्तम त्याग धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो पूर्ण राग विनशावें, आकिन्चन धर्म जगावें ।

हे आकिन्चन धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ॥

गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।

हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें॥23॥

ॐ ह्रूँ उत्तम आकिन्चन धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

जो आस्रव भाव ना पावे, वे ब्रह्मचर्य प्रगटावें ।
हे ब्रह्मचर्य धर्म के धारी!, तव चरणों ढोक हमारी ।।
गुरु पंचाचार के धारी, होते हैं जग उपकारी ।
हम आचार्यों को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।24।।

ॐ हूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

(द्वादश तप धारक आचार्य श्री)

(चाल छन्द)

जो त्याग करें आहारा, उनने अनशन तप धारा ।
हे अनशन तप के धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ।।
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।25।।

ॐ हूँ अनशन तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं कम आहारी।
हे ऊनोदर तप धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ।।
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।26।।

ॐ हूँ ऊनोदर तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ऋषि व्रत संख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी ।
हे व्रत परिसंख्या के धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ॥
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥27॥

ॐ हूँ व्रत परिसंख्यान तपो गुण सहित आचार्य श्री........मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

रस त्याग सुतप के धारी, रस छोड़ें हो अविकारी ।
हे रस परित्याग के धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ॥
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥28।

ॐ हूँ रस परित्याग तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

तप विविक्त शैय्यासन धारी, हो अनाशक्त अनगारी ।
हे विविक्त शैय्यासन धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ॥
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥29॥

ॐ हूँ विविक्त शैय्यासन तपो गुण सहित आचार्य श्री...... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

तप कायक्लेश के धारी, तजते ममत्व अनगारी ।
हे कायक्लेश तप धारी!, हम अर्चा करें तुम्हारी ।।
गुरुवर आचार्य हमारे, शिव पथ में बनो सहारे।
हम तव पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।30।।

ॐ हूँ कायक्लेश तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

ज्ञानोदय छंद

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात ।
गुरु के द्वारा लेते प्रायश्चित, करते दोषों का संघात ।।
प्रायश्चित तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य। ।।31।।

ॐ हूँ प्रायश्चित तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

दर्श ज्ञान चारित्र रूप है, और विनय उपचार कहा ।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा ।।
विनय सुतप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य। ।।32।।

ॐ हूँ विनय गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

करे साधना साधक अपनी, उसमें कोइ बाधा आवे ।
दूर करें निस्वार्थ भाव से, वैय्या वृत्ति कहलावे ।।
वैय्यावृत्ती तप का पालन, करते परमेष्ठी आचार्य ।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।33।।

ॐ ह्रूँ वैय्यावृत्ति तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन ।
वाचन पृच्छन अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीण ।।
स्वाध्याय तप पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।34।।

ॐ ह्रूँ स्वाध्याय तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं ।
आतम ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं ।।
व्युत्सर्ग तप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य ।।35।।

ॐ ह्रूँ व्युत्सर्ग तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन ।

आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीण ॥

ध्यान सुतप का पालन करते, जो हैं परमेष्ठी आचार्य ।

गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव सहित जग के सब आर्य ॥36॥

ॐ ह्रूँ ध्यान तपो गुण सहित आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/चरणाभ्यां प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि ।

पूर्णार्घ्य

दोहा - छत्तिस गुणधारी कहे, जैनाचार्य महान ।

जिनकी अर्चाकर विशद, पाएँ शिव सोपान ॥

ॐ ह्रूँ छत्तीस मूलगुण सहित आचार्य श्री...... मुनीन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ चरणाभ्यां छत्तीस प्रज्जवलित दीप स्थापनं करोमि ।

जाप्य :- ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः ।

जयमाला

दोहा

परम पूज्य कहलाए जो, तीनों लोक त्रिकाल ।

परमेष्ठी आचार्य की, गाते हम जयमाल ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

काल अनादि अनन्त कहा यह, जीव अनादी रहे अनन्त ।

काल अनादी हैं परमेष्ठी, करते हैं कर्मों का अन्त॥1॥

परमातम अरहंत सिद्ध हैं, तीन लोक में पूज्य विशेष ।

प्रभु की वाणी का जीवों को, देने वाले सद् उपदेश ॥2॥

पंचाचार का पालन करते, भवि जीवों को देते ज्ञान ।
स्व-पर के उपकारी हैं जो, करने वाले जग कल्याण ॥3॥
द्वादश तप दश धर्म के धारी, षट् आवश्यक गुप्तीवान ।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, होते हैं आचार्य प्रधान ॥4॥
पंच महाव्रत समिति पंच जो, होते पंचेन्द्रिय जयवान ।
केशलुंच क्षितिशयन अचेलक, न्हवन त्याग इक भुक्तीवान ॥5॥
अदन्त धावन स्थिति भोजी, षट् आवश्यक धर ऋषिराज ।
विशद भाव से अर्चा करके, सफल सभी हों पूरे काज ॥6॥
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, भी करते हैं ज्ञान ध्यान ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, परमेष्ठी आचार्य महान ॥7॥
जिनकी अर्चा भवि जीवों को, देने वाली जग से त्राण ।
'विशद' हृदय से करते हैं हम, गुरुवर का पावन गुणगान ॥8॥

दोहा-

छत्तिस गुण धारी गुरु, रहते निज में लीन ।
हमको अपने सम करो, करो हमें स्वाधीन ॥

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री.......... मुनीन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा -पूजा की है भाव से, किया विशद गुणगान ।
जिसका फल हमको मिले, पावन पद निर्वाण ॥

॥ पुष्पाजलिं क्षिपेत् ॥

आचार्य परमेष्ठी चालीसा

दोहा-

नमन किए आचार्य पद, होवें पाप विनाश।
छत्तिस गुण की साधना, होवे ज्ञान प्रकाश ॥
श्री गुरुवर की भक्ति से, मिलता सौख्य अपार।
चालीसा को भाव से, पढ़ते बारम्बार ॥

चौपाई

जय आचार्य क्षमा के सागर, जय गुरुवर जी ज्ञान उजागर ॥1॥
तुमने ज्ञान सुधारस पाया, सर्व धर्म का ज्ञान बताया ॥2॥
जय गुरुवर त्रि गुप्ति के धारी, सर्व जगत तुम पर बलिहारी ॥3॥
मन-वच-तन को बस में करते, सर्व दुखों को पल में हरते ॥4॥
पंचाचार का पालन करते, दीक्षा शिक्षा संघ में धरते ॥5॥
आगम ज्ञान सत्य के धारी, सत्य धर्म की महिमा न्यारी ॥6॥
दश धर्मों की पहनी माला, महाव्रतों को तुमने पाला ॥7॥
घोर तपों को जो नित तपते, निज में रह निज आतम भजते ॥8॥
तप से कर्म की धूम उड़ाई, निज गुण की नित करें सफाई ॥9॥
पीड़ित कर्मों को कर दीना, ऋद्धि-सिद्धियाँ आईं नवीना ॥10॥
तप से आतम कुंदन करते, कर्म इसी से आप ही हरते ॥11॥
त्याग धरम ही सबसे सुन्दर, मिले इसी से मुक्ति समुंदर ॥12॥

धर्म से आतम शुद्ध है होता, धर्म तो सुख के बीज है बोता ||13||
अनुनय करते हम भी ऋषिवर, आशा पूरी करना गुरुवर ||14||
करुणा सागर आप बहा दो, मेरा मुझ से मिलन करा दो ||15||
समता का देखूँ मैं दर्पण, तन-मन जीवन तुम को अर्पण ||16||
जो भी गुरु की भक्ति करते, शक्ति बल आयु सुख बढ़ते ||17||
चरणों का यह चमत्कार है, गुरु जी तुमको नमस्कार है ||18||
श्री गुरु से है यही कामना, पूरी कर दो मेरीभावना ||19||
दुष्ट कर्म को शीघ्र भगा दो, निज का निज से मिलन करा दो ||20||
सब जीवों पर समता धारी, दया के तुम गुण गण भण्डारी ||21||
दिल से भक्ति करे तुम्हारी, दुष्कर्मों की शक्ति हारी ||22||
शब्द अर्थ भावों से वंदन, दर्श करूँ हो जाऊँ चंदन ||23||
अज्ञानी हूँ ज्ञान करा दो, खाली झोली गुरु भरा दो ||24||
है विशेष गुण के जो धारी, परमेष्ठी जग मंगलकारी ||25||
भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ||26||
आचार आधार वान कहाए, व्यवहारवान प्रकर्ता गाए ||27||
आयो पाद दर्शि अवपीड़क, अपरस्त्रावि गाए निर्यापक ||28||
जग के दुख ने मुझको घेरा, छूटे जन्म मरण का फेरा ||29||
बूढ़ा बच्चा और जवान, करते हैं गुरु का गुणगान ||30||

सुन्दर रूप निहार न थकते, वीतरागता को सब चखते ॥31॥
स्वयं तिरें सबको तिरवाते, मोक्ष मार्ग की राह दिखाते ॥32॥
समता अमृत क्रोध को नाशे, उत्तम क्षमा धर्म परकाशे ॥33॥
आरती कर हम गुरु को ध्यायें, भक्ति भाव से शीश झुकायें ॥34॥
जो प्राणी आचार्य को ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते ॥35॥
पावन मोक्ष मार्ग अपनाते, शिवपुर अपना धाम बनाते ॥36॥
जैनाचार्य को हम भी ध्यायें पद में सादर शीश झुकायें ॥37॥
हृदय कमल में अपने ध्यायें मुक्तकंठ से महिमा गाएँ ॥38॥
भक्ती करके हम हर्षाए, शीश झुकाकर आशिष पाएँ ॥39॥
जबतक जीवन रहे हमारा, जिन गुरुओं का मिले सहारा ॥40॥

दोहा- धर्म सरोवर आप हो, हम हैं भोले जीव।
ऐसा आशीर्वाद दो, दृढ़ हो धर्म की नींव ॥
परम पूज्य आचार्य श्री, देना ये वरदान।
भक्ति नित करता रहूँ, बारम्बर प्रणाम ॥

जाप्य : ॐ हूँ श्री आचार्य परमेष्ठिभ्योनमः।

अर्घ्य

दोहा - छत्तिस गुणधारी कहे, परमेष्ठी आचार्य
जिनके चरणों में "विशद", वंदन बारम्बार ॥

ॐ हूँ प.पू. आचार्य श्री .... मुनीन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

गुरुवर की आरती....

(तर्ज:- हे गुरुवर तेरे....)

हे गुरुवर! तेरे चरणों में, हम वंदन करने आये हैं ।
हम वंदन करने आये हैं, अभिनंदन करने आये हैं ।।
हे गुरुवर ! तेरे चरणों में, हम आरति करने आये हैं ।।टेक।।
तुम राग द्वेष अरु मोह त्याग, निज आतम को पहिचाना है ।
गृह त्याग धार वैराग्य लिया, परमातम को ही जाना है ।।
हे गुरुवर ! तेरे चरणों में, हम आरति करने आये हैं ।।1।।
गुरुवर ने वैराग्य धारकर, सत् संयम को पाया है ।
तप त्याग साधना के पथ को, निज जीवन में अपनाया है ।।
हे गुरुवर! तेरे चरणों में, हम आरति करने आये हैं ।।2।।
उपसर्ग परीषह बाधाएँ, व्याधी कोई भी आए ।
सब समता भाव से सहते हैं, मन में कुछ खेद नहीं लाएं ।।
हे गुरुवर ! तेरे चरणों में, हंम आरति करने आये हैं ।।3।।
शीलव्रतों को धारण करके, आतम दीप जलाया है ।
पंच महाव्रत गुप्ति त्रय, समकित चारित्र को पाया है ।
हे गुरुवर ! तेरे चरणों में, हम आरति करने आये हैं ।।4।।
गुरुवर की मुद्रा को लखकर, पुलकित अति हृदय हमारा है ।
"शुभ विशद" भक्ति मुक्ती का तेरी, गुरुवर एक सहारा है ।।
हे गुरुवर! तेरे चरणों में, हम वंदन करने आये हैं ।
हम वंदन करने आये हैं, अभिनंदन करने आये हैं ।।
हे गुरुवर ! तेरे चरणों में, हम आरति करने आये हैं ।।5।।

गुरुवर की आरती....

(तर्जः- भक्ति बेकरार है.....)

गुरुवर का दरबार है, जग में मंगलकार है ।
जैन धर्म की आज यहाँ पर, होती जय जयकार है ।।टेक।।
घृत का दीप जलाया है, ये आज यहाँ पर लाए जी -2 ।
विशद भावना से भरकर के, आरति करने आए जी -2 ।।
गुरुवर का दरबार है, जग में मंगलकार है ।
जैन धर्म की आज यहाँ पर, होती जय जयकार है ।।1।।
दूर दूर से लोग यहाँ पर, गुरु भक्ति को आते हैं -2 ।
विशाल हृदय से गुरु चरणों में, नत हो शीश झुकाते है -2 ।।
गुरुवर का दरबार है...........।।2।।
वीतराग गुरुवर की मुद्रा, मोक्ष मार्ग दर्शाए जी-2 ।
भव्य जीव गुरु दर्शन करके, मन ही मन हर्षाए जी-2 ।।
गुरुवर का दरबार है ....।।3।।
गुरु के चरणों का गंधोदक, जिनको भी मिल जाता है-2।
जीवन में सौभाग्य परम तब, उनका भी खिल जाता है-2।।
गुरुवर का दरबार है............।।4।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, श्री गुरुवर की वाणी है-2।
विशद ज्ञान प्रगटाने वाली, जन जन की कल्याणी है -2।।
गुरुवर का दरबार है...........।।5।।